International Journal of Home Science 2021; 7(1): 78-81

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2021; 7(1): 78-81
© 2021 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 01-11-2020
Accepted: 03-12-2020

रोक्साना बेगम
गृह विज्ञान विभाग राँची
विश्वविद्यालय, राँची, झारखंड, भारत

डॉ. सीमा डे
गृह विज्ञान विभाग राँची
विश्वविद्यालय, राँची, झारखंड, भारत

Corresponding Author:
रोक्साना बेगम
गृह विज्ञान विभाग राँची
विश्वविद्यालय, राँची, झारखंड, भारत

बुनकरों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन ओरमांझी प्रखण्ड के संदर्भ में

रोक्साना बेगम, डॉ. सीमा डे

DOI: https://doi.org/10.22271/23957476.2021.v7.i1b.1108

सारांश
झारखण्ड में विभिन्न प्रकार की जाति एवं धर्म के लोग निवास करते हैं जिनका कुछ व्यवसाय है जिसके कारण उनको कारीगर बुनकर (जुलाहा) लोहार, बढ़ई कहा जाता है उनकी समाज में आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति अच्छी नहीं है। प्रस्तुत शोध आलेख में बुनकरों की सामाजिक आर्थिक स्थिति को ज्ञात करने के लिए ओरमांझी प्रखण्ड के इरबा के चार गाँव को लिया गया है। अधिकतर लोग अशिक्षित एवं धार्मिक विचार के थे। कच्चे मकानों में रहते थे। आय के साधन कृषि, बुनकर, दर्जी, पशुपालन, वालपुट्टी आदि थे। उनके आमदनी का स्वरूप मासिक था। निम्न स्तर का जीवन यापन करते थे। परिवार नियोजन को प्राथमिकता नही देने के कारण उनके सदस्यो की संख्या अधिक थी।

कुटशब्दः बुनकर (जुलाहा), वस्त्र उद्योग, सामाजिक आर्थिक स्थिति

प्रस्तावना
भारत विविधताओं का देश है।यहाँ नाना प्रकार के सामाजिक समूह, व्यवहारिक जातियाँ, धार्मिक, समूह और सामाजिक वर्ग पाए जाते है। इन सभी ने शिक्षा के रूप में अपना प्रभाव डाला है और मानव के मानसिक तथा सांस्कृतिक विकास को किसी–न–किसी दिशा में मोड़ा है।
जातियों की दृष्टि से परम्परागत भारतीय समाज तीन वर्गों में आते हैं– 1. व्यवसायिक जातियाँ, 2. धार्मिक समूह और 3. सामाजिक वर्ग।
प्रारंभ से ही भारत में सभी जाति के लिए लोग किसी–न–किसी व्यवसाय में लगे रहते थे। प्रत्येक जाति का अलग–अलग व्यवसाय था। किन्तु बढ़ई, लोहार, तेली, बुनकर ऐसी जातियाँ थी जो अपने–अपने व्यवसाय में लगी रहती थी। और सुदूर देहातों में आज भी लगी हुई है– जाति व्यवसाय ने हिन्दू सामाजिक संगठन को सुदृढ़ और स्थायी बनाया है। (सिंह 2006)[1]
प्राचीनकाल में मानव अपने शरीर को ढ़कने के लिये वृक्षों की पत्तियों तथा छालों का प्रयोग करता था। सभ्य होने के साथ–साथ तन को ढकने की समस्या आई। जिससे कपड़ों के निर्माण की आवश्यकता पड़ी। प्राचीनकाल में वस्त्र–निर्माण कला काफी उन्नत थी। शुरू–शुरू में वनस्पति जगत में प्राप्त रेशों से वस्त्रों का निर्माण किया जाता था।जब मनुष्य को वस्त्र की आवश्यकता हुई तो वृक्षों की छाल, पशुओं की खाल, बनी हुई चटाई इत्यादि से ही संतुष्ट होना पड़ा। अपनी बुद्धि से मानव ने बुनाई करना सीखा तथा क्रमशः उन्नति के कारण आज विभिन्न प्रकार के वस्त्रों का उपयोग कर रहा है।परन्तु आजकल वैज्ञानिक उन्नति के कारण वस्त्र निर्माण में प्रयुक्त रेशों का निर्माण रासायनिक क्रिया द्वारा किया जाता है।
आज विभिन्न अनुसंधानों द्वारा नए–नए रेशों के निर्माण के क्षेत्र में प्रगति की जा रही है। वस्त्र–निर्माण मं नए–नए आयाम स्थापित किए जा रहे हैं। (वर्मा 2012)[2]
बुनाई कला के आविष्कार से वस्त्र निर्माण के क्षेत्र में एक क्रांति आ गई। प्रांरभ में वस्त्रों का निर्माण छोटे पैमाने पर ही होता था लेकिन फिर घर–घर में वस्त्र निर्माण होने लगा। और इसने एक लघु–उद्योग का रूप ले लिया। आज वस्त्र निर्माण के लिए अनेकों बड़ी–बड़ी कम्पनी और कारखाने अस्तित्व में आ चुके हैं। (मंसूरी 2011)[3]
समय की गति के साथ सभ्यता व संस्कृति में परिवर्तन आता गया। सबसे पहले हाथ से बुने वस्त्र का प्रचलन हुआ। फैशन और सभ्यता की होड़चली। इस तरह आज का मानव उष्णता, सौन्दर्य फैशन एवं सभ्यता के विचार से वस्त्र धारण करने लग गया। (गर्ग 1994)[4]

पूर्व अध्ययनों की समीक्षा

शर्मा (2007)[5] ने बताया कि– बाने की मद्द से करधे के तार्प बीम पर ताने कर कपड़े को बुना जाता है। कपड़े बनने की इस प्रक्रिया में कई प्रक्रियाएँ एक साथ शामिल होती है। जिन्हें करधे के पृथक्–पृथक् भाग सम्पादित करते है। पहली क्रिया के अनुसार हारनेस द्वारा उन धागों को ऊपर उठा लिया जाता है। जिनके नीचे से शटल गुजारनी होती है, यह स्थान शेड कहा जाता है। शटल दायीं ओर से बायी ओर चली जाती है। यह शटल प्रक्रिया कहलाता है।

शर्मा (2008)[6] के अध्ययन अनुसार– सूत प्राचीन काल में हाथ से ही बाँटा जाता था लेकिन अब दो विधियाँ है प्रथम तकली और दूसरी चरखा जिसके द्वारा सूत बाँटा जाता है। आजकल तकली का प्रयोग केवल स्कूलों तक रह गया है। इसी तरह चरखों का प्रयोग हस्त कला केन्द्रों तक ही रह गया है।

खनूजा (2015) [7] के अनुसार– वस्त्र शब्द का प्रयोग उस सभी वस्त्रों के लिए किया जाता है जो रेशों को दूबाकर (Felting) या बुनाई (Knittingorweving) के द्वारा तैयार किये जाते हैं।

hivikaspedia.in [8] के अनुसार – हथकरघा बुनकर व्यापक कल्याण योजना के दिशा–निर्देश हथकरघा बुनकर सामाजिक सुरक्षा संबंधी लाभ प्राप्त कर सकें इसके लिए भारत सरकार, स्वास्थ्य बीमा योजना (एचआईएस) और महात्मा गांधी बुनकर बीमा योजना (एमजीबीबीवाई) नामक दो घटकों के साथ हथकरघा बुनकर व्यापक कल्याण योजना कार्यान्वित कर रही है। स्वास्थ्य बीमा योजना का उद्देश्य 12वीं योजना में बुनकर समुदाय की पहुंच स्वास्थ्य सुविधाओं तक कराना है।

स्वास्थ्य बीमा योजना को 12वीं योजना में बहिरंग रोगी उपचार की अतिरिक्त सुविधा के साथ राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना के आधार पर कार्यान्वित किए जाने का प्रस्ताव किया गया है जिसे श्रम एवं रोजगार मंत्रालय द्वारा हथकरघा बुनकरों के लिए इस योजना में जोड़ा जा रहा है।

अब्दुर्रज़्जाक अंसारी जन्म शताब्दी वर्ष 1917–2017 के सौजन्य से[9] – लगभग 40 बुनकर सहकारी समितियों के जरिए उन्होंने आदिवासी महिलाओं के रोजगार के लिए द्वार भी खोल दिए जिसके द्वारा उन्हें साल के पत्तों की थालियाँ, कटोरियाँ आदि बनाने का काम सिखाया गया। अब्दुर्रज़्जाक अंसारी के ऐसे कार्यों से समाज न केवल शिक्षित हुआ वरन आर्थिक संरचना भी मजबूत हुई।

सुखिया (2015) [10] के अनुसार – धागो के निर्माण में कटाई अंतिम क्रिया है। सूत काटने में तीन क्रियाएँ निहित होती है। रूई से सूत निकलना मजबूती के लिये उसे बल या ऐंठन देना फिर सूत का तकलियों या फिरकियों पर लपेटना सूत काटने की ये तीनों क्रियाएँ साधारणत्य दोनों घरेलू चरखे और काटने की मशीनों द्वारा की जाती है।

शोध क्षेत्र और अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन में इरबा जो ओरमांझी प्रखण्ड के इरबा गाँव को शामिल किया गया। कुल 100 प्रतिदर्श का चयन उद्देश्यपूर्ण विधि द्वारा किया गया।

अध्ययन का उद्देश्य

बुनकरों के सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।

उपकल्पना

बुनकरों की व्यवसायिक स्थिति संतोषजनक नहीं है।

बुनकरो की सामाजिक, आर्थिक स्थिति

बुनकरों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति जानने के लिए अनुसूची एवं व्यक्तिगत साक्षात्कार कर आंकड़ों का संकलन किया गया।

सारणी 1: बुनकरों की आयु के आधार पर वर्गीकरण

आयु वर्ग	संख्या	प्रतिशत
20–30	11	11
30–40	47	47
40–50	30	30
50–60	12	12
कुल	100	100

सारणी 1 से पता चलता है कि 20–30 तक के आयु वर्ग में 11: 30–40 आयुवर्ग में 47:, 40–50 आयुवर्ग में 30: तथा 50–60 आयुवर्ग में 12: बुनकर पाए गए। सबसे अधिक 47: बुनकरों की संख्या 30–40 आयुवर्ग में पाई गई।

सारणी 2: धर्म के आधार पर वर्गीकरण

धर्म	संख्या	प्रतिशत
इसाई	2	2
हिन्दू	15	15
मुस्लिम	75	75
सरना	8	8
कुल	100	100

उपरोक्त सारणी 2 से पता चलता है कि सर्वाधिक मुस्लिम धर्म 75: लोग पाए गए, हिन्दू 15: तथा सरना 8: इसाई 2: थे।

सारणी 3: बुनकरों की परिवारिक व्यवस्था

पारिवारिक व्यवस्था	संख्या	प्रतिशत
संयुक्त परिवार	32	32
एकल परिवार	68	68
कुल	100	100

32 प्रतिशत बुनकर संयुक्त परिवार में रहते थे तथा 68 प्रतिशत एकल परिवार में निवास करते थे।
(सारणी : 3)

सारणी 4: परिवार मे सदस्यों की संख्या

परिवार मे सदस्यों की संख्या	संख्या	प्रतिशत
तीन से चार	27	27
पाँच से छः	27	27
सात से अधिक	46	46
कुल	100	100

मुस्लिम परिवार होने के कारण परिवार में सदस्यों की संख्या 7 से ज्यादा थी कारण वे लोग परिवार नियोजन के पक्ष में नहीं रहते है। (सारणी : 4)

सारणी 5: बुनकरों की शैक्षणिक स्थिति

शिक्षा का स्तर	बुनकरों की संख्या	प्रतिशत
निरक्षर	15	15
साक्षर	20	20
मैट्रिक से कम	20	20
मैट्रिक	15	15
बी.ए.	10	10
एम.ए.	10	10
कुल	100	100

बुनकरों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने की वजह से वे लोग ज्यादा पढ़ाई पर ध्यान नहीं देते थे तथा परिवार चलाने के लिए थोडा सा बड़े होने पर ही धन अर्जन करने में लग जाते थे। सिर्फ 10 प्रतिशत बुनकर ही B.A तथा M.A तक पढ़े थे। (सारणी : 5)

सारणी 6: बुनकरों की पारिवारिक आय के स्रोत

आय का स्रोत	संख्या	प्रतिशत
कताई एवं वस्त्र निर्माण	37	37
कृषि	50	50
वस्त्र उद्योग एवं कृषि कार्य	9	9
पशुपालन	4	4
कुल	100	100

सारणी 6 से पता चला बुनकरो के पारिवारिक आय के स्त्रोत मे कृषि कार्य 50 प्रतिशत एवं पशुपालन में 4 प्रतिशत शामिल थे।

सारणी 7: मासिक आय के आधार

मासिक आय	संख्या	प्रतिशत
4000–5000	20	20
5000–7000	50	50
7000 से अधिक	30	30
कुल	100	100

सारणी 7 में यह पाया गया कि 50 प्रतिशत बुनकरों की आमदनी 5000–7000 तथा 7000 से अधिक 30 प्रतिशत बुनकर थे।

सारणी 8: बुनकरों का परिवारिक रहन–सहन का स्तर

रहन–सहन के आधार पर	संख्या	प्रतिशत
निम्न	65	65
मध्यम	24	24
उच्च	8	8
कुल	100	100

सारणी 8 से पाया गया कि अधिकांश 65 प्रतिशत बुनकरो का रहन सहन निम्न स्तर का था केवल 8 प्रतिशत ही उच्च स्तर के थे।

सारणी 9: आमदनी के स्वरूप

	संख्या	प्रतिशत
साप्ताहिक आमदनी	15	15
मासिक आमदनी	65	65
वार्षिक आमदनी	20	20
कुल	100	100

सारणी 9 से पता चलता है कि साप्ताहिक आमदनी वाले 15 प्रतिशत तथा मासिक आमदनी वालो की संख्या 65 प्रतिशत थी ।

सारणी 10: मकान के स्वरूप

मकान का स्वरूप	संख्या	प्रतिशत
कच्चा	63	63
पक्का	9	9
मिश्रित	29	29
कुल	100	100

आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण कच्चे घरों (63 प्रतिशत) में निवास करना रहे थे। पक्का घरो मे रहने वाले मात्र 9 प्रतिशत ही थे।

सारणी 11: यातायात के साधन

यातायात के साधन	संख्या	प्रतिशत
पैदल	53	53
साईकिल	22	22
ऑटो	20	20
अन्य	5	5
कुल	100	100

सारणी 11 से पता चलता है कि अधिकांश 53 प्रतिशत लोग पैदल ही बुनकर स्थल तक जाते थे !

सारणी 12: मूलभूत सुविधाएँ

मूलभूत सुविधाएँ	संख्या	प्रतिशत
स्वच्छ पेयजल	35	35
गन्दे पानी की निकासी	10	10
जरूरत के सामाना के लिए बाजार	13	13
शौचालय की व्यवस्था	42	42
कुल	100	100

सारणी संख्या 12 से पता चलता है कि 72 प्रतिशत बुनकारो के घरो मे शौचालय की व्यवस्था थी । 35 प्रतिशत पेयजल की उपलब्धता थी। गन्दी पानी की निकासी के पक्की नालियॉ 10 प्रतिशत ही थी । बनकरो की मूलभूत सुविधाओ की भी अभाव पाया गया । वे बुनाई के लिए सूत छोटानागपुर रिजनल हैण्डलूम वीवर्स को ऑपरेटिव यूनियन लिमिटेड से प्राप्त करते थे तथा तैयार कपडा चादर वही ला कर जमा करते थे।

निष्कर्ष

भारत गॉवो का देश है, जिसकी लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या गॉवो मे निवास करती है । जहॉ एक तरफ शहरी क्षेत्र तीव्र गति से विकास कर रहा है , वहीं दुसरी तरफ ग्रामीण भारत मे गरीबी , अशिक्षा, बेरोजगारी , स्वास्थय का अभाव , कुपोषण सुरक्षित एवं पर्याप्त पेयजल की कमी आदि की समस्याएं विकराल रूप धारण किए जा रही है। देश के ग्रामीण क्षेत्रो मे स्वास्थय की समस्याएँ वहॉ की समाजिक आर्थिक एवं अन्य परिवेशीय स्थितियो के कारण विकराल रूप धारण किये जा रही है। आर्थिक स्थिती खराब रहने के कारण अधिकांश लोग कम पढे लिखे थे। शिक्षा का सीधा संबंध जागरूकता से होता है। शिक्षा मनुष्य के अन्दर स्वतंत्र निर्णय लेने का भाव तथा अपने अधिकारो के प्रति सजगता की भावना विकास करती है। झारखण्ड के बुनकरो की समाजिक आर्थिक स्थिती मे सुधार हो रहा है पर आज उतनी भी अच्छी नही है । कच्चा माल खरीदना उनके लिए आसान था, पर तैयार माल बेचकर 10 प्रतिशत लाभ ही उन्हे प्राप्त होता था । सरकारी अनुदान या सहयोग राशि उनको नही मिला था। इसकी कोई जानकारी भी बुनकरो को नही थी। अतः शिक्षा एवं रोजगार की समस्या को समझना आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. सिंह, ए.के. (2006), भारतीय समाज (जाति और वर्ग) एवं शिक्षा– सिद्धांत, शिक्षा दर्शन एवं शैक्षिक, समाज शास्त्र
2. वर्मा, प्रमिला, (2012), कटाई, तथा धागे का निर्माण वस्त्र विज्ञान एवं परिधान, बिहार हिन्दी ग्रन्थ आकादमी, पटना पृ.सं. –59
3. मंसूरी फरीश, (2011) वस्त्र विज्ञान का महत्व, आधुनिक गृह विज्ञान, ओमेगा, पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ.सं.–163–166
4. गर्ग, कमला, (1994), वस्त्र और उनकी विशेषताएँ, गृह विज्ञान, आशा प्रकाशन गृह, नई दिल्ली, पृ.सं.–303
5. शर्मा सुमन, (2007), सूत निर्माण एवं कटाई, वस्त्र विज्ञान

विश्वभारती पब्लिकेशन्स नई दिल्ली पृ.सं.–44–47
6. शर्मा आनन्द, (2008), वस्त्र विज्ञान एक परिचय, वस्त्र विज्ञान एवं बनाई कार्य, रिसर्च पब्लिकेशन्स जयपुर पृ.सं.–15–20
7. खनूजा रीना, (2015), वस्त्र निर्माण बुनाई फेल्टिंग एवं निटिंग, वस्त्र विज्ञान के सिद्धांत अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा, पृ.सं. –159–161
8- www.mpragramodyogglobal.go.in rurallndu
9. अब्दुरज़्जाक अंसारी जन्म शताब्दी वर्ष 1917–2017 के सौजन्य से पृ.सं.–1–16
10. सुखिया एस.पी. (2015), वस्त्र विज्ञान के मूल तत्व, पृ.सं. –73–74